LITTERA PUBLIC SCHOOL

CLASS II CHAPTER 12 HINDI

मत नाचो भालू दादा

इस कविता में भालू के नाचने की कला का वर्णन किया गया है।जैसे ही मदारी के डम, डम डम डम डमरू बजने की आवाज बच्चों को सुनाई पड़ती है वह झटपट दौड़े भालू का नाच देखने के लिए पहुंच जाते हैं। डमरू की आवाज पर धधम धम धधम भालू के पैर उठते और गिरते हैं।भालू का यह नाच बच्चों को बहुत पसंद आता है और वे उत्साहित होकर भालू दादा से पूछते हैं कि आपने यह नाच कहां से सीखा है। तब भालू दादा रोकर अपनी व्यथा बताते हैं।भालू दादा कहते हैं जिसे तुम मेरा नाच समझ रहे हो असल में इसे मैंने गर्म तवे पर डमरू की डम डम बजने से सीखा है। जैसे ही थक कर मेरे कदम रुक जाते हैं वैसे ही मदारी तवे की आँच बढ़ा देता है और दर्द एवं तकलीफ की वजह से मेरे कदम फिर से चलने लगते हैं। भालू की व्यथा सुनकर बच्चे भावुक हो जाते हैं और स्वयं को भालू दादा का अपराधी समझ कर उनसे माफी मांगते हैं।साथ ही बच्चे ऐसी शपथ लेते हैं कि वह ऐसा नाच नहीं देखेंगे और मदारी को भी वह ऐसा नाच दिखाने के लिए मना करते हैं।

शब्दार्थ:-

आँच-गर्मी

क्षमा-माफ़ी

अपराधी-दोषी

कसम-शपथ/सौगंध

पर्यायवाची शब्द:-

कदम-पैर, पाँव, पग

भालू- रीछ, ऋक्ष

मदारी-कलंदर, नट

अपराधी-दोषी, कसूरवार

डमरु-डुगडुगी

नाच-नृत्य

दादा-पितामह

विलोम शब्द:-

गिरते×उठते

रुकते×चलते

बढ़ना×घटना

कठिन शब्द:-

धधम

कदम

डमरु

मदारी

आँच

तवा

धम्मक

अपराधी

क्षमा